2017-18

Impact Factor - 3.452 ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

December - 2017

SPECIAL ISSUE-XXI

भाषा, साहित्य आणि अनुवाद
भाषा, साहित्य और अनुवाद
Language, Literature and Translation

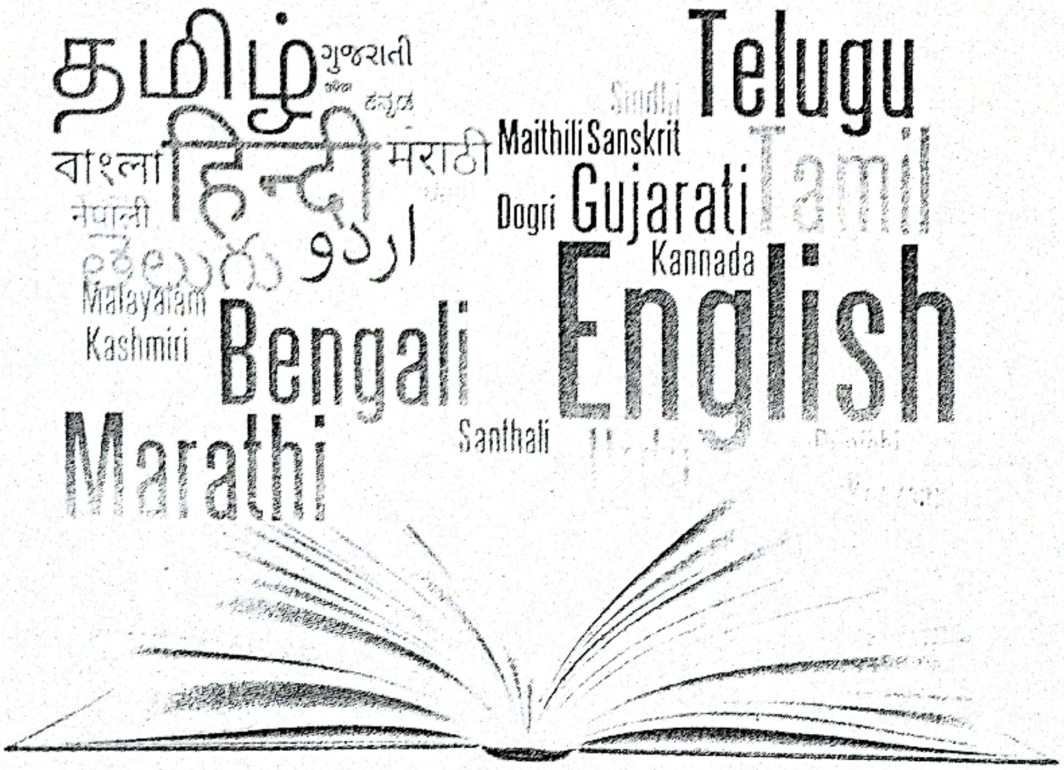

अतिथी संपादक :
डॉ. भाऊसाहेब गमे
प्राचार्य,
महात्मा गांधी विद्यामंदिरचे कला व वाणिज्य महाविद्यालय,
येवला, जि. नाशिक (महाराष्ट्र)

मुख्य संपादक :
डॉ. धनराज धनगर
सहा. प्राध्यापक,
महात्मा गांधी विद्यामंदिरचे कला व वाणिज्य महाविद्यालय,
येवला, जि. नाशिक (महाराष्ट्र)

सहयोगी संपादक : **प्रा. रघुनाथ वाकळे** (हिंदी विभाग), **प्रा. कमलाकर गायकवाड** (इंग्रजी विभाग)

This Journal is Indexed in :
- UGC Approved Journal List No. 40705 & 44117
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- Universal Impact Factor (UIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

RESEARCH JOURNEY

SWATIDHAN PUBLICATIONS

Scanned with OKEN Scanner

Impact Factor – 3.452 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

December-2017
SPECIAL ISSUE-XXI

भाषा, साहित्य आणि अनुवाद
भाषा, साहित्य और अनुवाद
Language, Literature and Translation

अतिथी संपादक :
डॉ. भाऊसाहेब व्ही. गमे
प्राचार्य,
कला व वाणिज्य महाविद्यालय, येवला
ता. येवला, जि. नाशिक

मुख्य संपादक :
डॉ. धनराज धनगर
सहा. प्राध्यापक, मराठी विभाग,
कला व वाणिज्य महाविद्यालय , येवला
ता. येवला. जि. नाशिक.

सहयोगी संपादक : प्रा. रघुनाथ वाकले (हिंदी विभाग), प्रा. कमलाकर गायकवाड (इंग्रजी विभाग)

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

© All rights reserved with the authors & publisher Price : Rs. 275/-

Scanned with OKEN Scanner

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal | ISSN : 2348-7143
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 3.009, (GIF) -0.676 (2013) | December 2017
Special Issue 21 : भाषा, साहित्य आणि अनुवाद
UGC Approved No. 40705 & 44117

अनुक्रमणिका

अ. नं.	शोध निबंधाचे शीर्षक	लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
	मराठी विभाग		
१	भाषा, साहित्य आणि अनुवाद यांचा सहसंबंध	डॉ. पृथ्वीराज तौर	०६
२	भाषांतर : स्वरुप आणि व्याप्ती	डॉ. भाऊसाहेब गमे	२०
३	अनुवाद संज्ञा-संकल्पना	डॉ. अरुण पाटील	२४
४	अनुवादित साहित्य : संकल्पना व स्वरूप	डॉ. सागर लटके	२७
५	अनुवाद प्रक्रिया : स्वरूप	डॉ. शिवप्रसाद वायाळ	३३
६	अनुवाद प्रक्रिया व पद्धती	डॉ. सुभाष आहेर	३५
७	अनुवादाचे प्रकार आणि मराठी साहित्य	डॉ. उज्ज्वला देवरे, सुनील खैरनार	३९
८	अनुवाद प्रक्रिया आणि सृजनशीलता	डॉ. प्रमोद आंबेकर	४२
९	भाषांतर आणि अनुवाद	डॉ. किरण गिंगळे	४७
१०	लोकसमुहाकडून पौराणिक विषयावर अनुवादित झालेली मथुरा लभान बोलीतील लोकगीते	डॉ. भगवान सावळे	५२
११	ख्रिस्तपुराण : रूपांतर, लिप्यंतर, प्रकारांतर व भाषांतर	प्रा. विनय मडगावकर	५७
१२	अनुवादाचे सांस्कृतिक महत्त्व	प्रा. माधवी पवार	६३
१३	अनुवाद : संकल्पना व महत्त्व	डॉ. गीतांजली चिने	६७
१४	काव्यानुवाद 'जगतांना' : साहित्य, भाषा व अनुवाद	प्रा. नवसो परब	६९
१५	भारतीय कवितांचे मराठी अनुवाद	डॉ. विद्या सुर्वे-बोरसे	७२
१६	अन्य भाषांमधून मराठी भाषेत अनुवादित झालेले ग्रंथ : एक आकलन	डॉ. स्नेहल मराठे	७५
१७	एक अजरामर अनुवाद – 'एक होता कार्व्हर'	डॉ. शीला गाढे	७८
१८	प्रसारमाध्यमे आणि इतर क्षेत्रातील अनुवाद संधी	डॉ. प्रकाश शेवाळे	८१
	हिंदी विभाग		
१९	अनुवाद साहित्य का स्वरूप एवं संकल्पना	डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी	८७
२०	अनुवाद : स्वरूप, आवश्यकता एवं समस्या	डॉ.अनिता नेरे, डॉ.योगिता हिरे	९१
२१	अनुवाद : स्वरूप और विवेचन	के. के. वच्छाव	९४
२२	अनुवाद साहित्य कि व्याप्ती और प्रासंगिक महत्त्व	डॉ. डी. बी. महाजन	९७
२३	अनुवाद एवं प्रयोजनमुलक हिंदी	डॉ. गजानन वानखेडे	९९
२४	अनुवाद साहित्य के प्रकार	प्रा. राजाराम शेवाळे	१०३
२५	अनुवाद : स्वरूप, महत्त्व एवं उपयोगिता	डॉ. सुनिता कावळे	१०७

Scanned with OKEN Scanner

२६	अनुवाद साहित्य : स्वरूप, संकल्पना एवं आवश्यकता	प्रा. रविंद्र ठाकरे	११०
२७	अनुवाद साहित्य कि सीमाएँ	प्रा. जितेंद्र थोरात	११३
२८	विज्ञापन कि भाषा में अनुवाद कि समस्याएँ	प्रा. आर. एन. वाकले	११७
२९	साहित्यिक अनुवाद की समस्याएँ	प्रा. विष्णू राठोड, डॉ. जालिंदर इंगळे	१२१
३०	अनुवाद साहित्य की सीमाएँ	प्रा. योगिता उशीर	१२४
३१	भाषिक अर्थ-संरचना और अनुवाद	डॉ. गीता दोडमणी	१२८
३२	अनुवाद : स्वरूप एवं समस्याएँ	डॉ. शैलजा जायस्वाल	१३३
३३	वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगोकी साहित्य का अनुवाद : स्वरूप एवं समस्याएँ	डॉ. अनिता नेरे, प्रा. हर्षल बच्छाव	१३७

इंग्रजी विभाग

34	Comparative Literature and Translation Studies	Dr. P R Bhabd	139
35	An Ecofeminist Reading of Toru Dutt's Select Translated Poems	Dr. Mohini R Gurav	142
36	Translation of Riddles : Some Semantic Observations	Dr. Leena Pandhare.	148
37	Translations of The Bible: A Review	Dr. Manisha Gaikwad	153
38	Translation Studies and Job Opportunities	Prof. Kamalakar B. Gaikwad	158
39	Loss and Gain in Translation from Hindi to English: A Stylistic Study of Multiple English Translations of Premchand's *Godaan* and *Nirmala*	Prof.. Navneet Kaur Dhawan Prof. Ratan Kamble	163
40	Dalit Literature in Translation	Prof. Anant P. Netake	166
41	Role of Translation	Prof. Changdev Kharat	169
42	Translation Studies and Its Significance	Prof.. Manali M. Kamble	171
43	An Analysis of Selected Autobiographies of Dalit Literature in Translation.	Prof. Ratan Kamble Prof..Navneet Kaur Dhawan	173
44	Three idiots' as an Adaptation	Prof. Shivaji Sontakke	177
45	Translation, Non-Translation, Mistranslation and Distortion of Sense	Prof. Milind Ahire & Prof. K.S. Kakhandki	183
46	A Brief Survey of Post 1990 Indian English Novel	Dr. Kallyan Kokane	187

या अंकाचे सर्व अधिकार प्रकाशकांनी स्वतःकडे राखून ठेवलेले आहेत. लेखांचे अधिकार प्रकाशक आणि संबंधित लेखकाधीन समान असून शोध निबंधातील मते ही संबंधित लेखाच्या लेखकांची वैयक्तिक मते आहेत. त्या मतांशी संपादक व प्रकाशक सहमत असतीलच असे नाही. लेखांच्या मूळ संहितेची सर्व जबाबदारी संबंधित लेखकांची आहे.

Published by -

© Mrs. Swati Dhanraj Sonawane, Director, Swatidhan International Publica

Email : swatidhanrajs@gmail.com Website : www.researchjourney.net Mo

Scanned with OKEN Scanner

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal | ISSN : 2348-7143
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 3.009, (GIF) -0.676 (2013) | December 2017
Special Issue 21 : भाषा, साहित्य आणि अनुवाद
UGC Approved No. 40705 & 44117

अनुवाद साहित्य के प्रकार

प्रा. राजाराम जी.शेवाळे
श्रीमती पुष्पाताई हिरे महिला महाविद्यालय,
मालेगाँव कैंप (नाशिक

अनुवाद के कई प्रकार हो सकते है । इन प्रकारों के मुख्य आधार चार हैं – अ) गद्य– पद्य, आ) साहित्यिक विधा, इ) विषय, ई) अनुवाद की प्रकृति । इनमें प्रथम तीन बाह्याधार है और अंतिम आंतरिक । इन आधारों पर मुख्य प्रकार इस प्रकार है –

अ) अनुवाद के गद्य– पद्य होने के आधार पर–

१) गद्यानुवाद – प्राय: मूल गद्य का ही गद्य में अनुवाद किया जाता है, परंतु यह आवश्यक नहीं है मूल पद्य का भी गद्य में अनुवाद किया जा सकता है ।

२) पद्यानुवाद – यह अनुवाद पद्य में होता है । मुख्यत: पद्य का ही पद्य में अनुवाद किया जाता है, अपितु मूल गद्य का भी पद्य में अनुवाद हो सकता है । इसे छंदानुवाद कहते हैं ।

३) मुक्तछंदानुवाद – यह अनुवाद मुक्त छंद में होता है । सामान्यत: मूल सामग्री मुक्त छंद में होना आवश्यक है तभी मुक्तछंदानुवाद किया जाता है ।

आ) साहित्यिक विधा के आधार पर :– इस आधार के मुख्य भेद हैं –

१) काव्यानुवाद – काव्य रचना का अनुवाद । प्रस्तुत अनुवाद गद्य, पद्य या मुक्त छंद किसी में भी हो सकता है । मुख्यत: काव्य का अनुवाद पद्य का मुक्तछंद में किया जाता है । काव्यानुवाद शैली आर अर्थ की दृष्टि मूल का सफल अनुवाद करना बहुत मुश्किल होता हैं ।

२) नाटकानुवाद – नाटक का नाटक के रुप में अनुवाद । किसी साहित्यिक विधाओं को भी नाटक रुप में अनुवाद (रुपांतरण) होता है और इसके विपरित नाटक के भी काव्य या कहानी के रुप में अनुवाद होते है। नाटक का नाटक के रुप में अनुवाद काफी कठिण होता है । कारण उसे पठनीय ही नहीं बल्कि रंगमंच पर खेला जा सकें । इसीलिए रंगमंच की सारी आवश्यकताओं तथा विशेषताओं का जानकार ही सफल नाटकानुवाद कर सकता है ।

३) कथानुवाद – कथा– साहित्य (उपन्यास– कहानी) का कथा– साहित्य में अनुवाद । यह अनुवाद काव्यानुवाद तथा नाटकानुवाद की तुलना में सरल होता है ।
इस आधार पर रेखाचित्रनुवाद, निबंधानुवाद, संस्मरणानुवाद आदि कई भेद हो सकते हैं ।

इ) विषय के आधार पर :–
इस आधार पर अनुवाद के कई भेद कर सकते हैं जैसे– सरकारी रिकॉर्डो के अनुवाद, गजेटियरों के अनुवाद, पत्रकारिता से संबंधित अनुवाद, विधि साहित्य का अनुवाद, वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद, गणित साहित्य का अनुवाद, अभिलेखों का अनुवाद, धार्मिक साहित्य का अनुवाद और ललित साहित्य का अनुवाद आदि ।

ई) अनुवाद की प्रकृति के आधारपर –
इस आधारपर अनुवाद के मूलत: दो भेद या प्रकार होते हैं –

Scanned with OKEN Scanner

१) मूलनिष्ठ अनुवाद – ऐसा अनुवाद जो यथासाध्य मूल का अनुगमन करें । मूल का अनुगमन अनुवादक का ध्यान विचार या कथ्य तथा अभिव्यक्ति या कथन पद्धति दोनों पर होता है । यह अनुवाद इन दोनों के मूल के निकट होना आवश्यक है ।

२) मूलमुक्त अनुवाद – अनुवाद के इस प्रकार में अनुवादक को काफी छूट रहती है, यह इसके नाम से ही स्पष्ट होता है । मुख्यत: यह छूट अभिव्यक्ति या कथन शैली में ही होता है न कि कथ्य या विचार में । कथ्य या विचार की दृष्टि से यह अनुवाद प्रधानत: मूल या मूलनिष्ठ ही होता है । यदि ऐसा नहीं हुआ तो वह अनुवाद नहीं कहा जा सकता हैं । मूलमुक्त अनुवादक लक्ष्य भाषा की सुविधानुसार, उद्देश्यानुसार तथा अनुवाद पढने या सुननेवालों की योग्यतानुसार बदलाव कर सकता है । इसे मूलाधारित कहना अधिक योग्य होगा ।

आमतौर पर जो अनुवाद दिए जाते हैं उनमें प्राय: उपर्युक्त दोनों का मिश्रितरुप या दोनों में से एक प्रयोग किया जाता है ।

अनुवाद की प्रकृति के अनुसार अनुवाद के अन्य प्रकारों का उल्लेख होता है जो मूलनिष्ठ और मूलमुक्त से भिन्न नहीं है बशर्ते अनेक बातों में एक दूसरे को ओवरलैप करते हैं । ये अन्य प्रकार निम्नांकित हैं –

१) शब्दानुवाद :– यह 'शब्द' और 'अनुवाद' के योग से बना शब्द हैं । इस प्रकार के अनुवाद में मूल के हर शब्द पर अनुवादक का ध्यान जाता है । शब्दानुवाद का प्रयोग एक से अधिक प्रकार के अनुवादों के लिए होता रहा है । इसके भी कई उपभेद किए जा सकते हैं । शब्दानुवाद के मुख्य उपभेद तीन हो सकते हैं –

अ) इसमें मूल सामग्री की हर शब्दाभिव्यक्ति का मुख्यत: उसी क्रम में अनुवाद किया जाये । अनुवाद का यह रुप निम्न कहा जाता है ।

ब) इस अनुवाद में क्रम आदि तो मूल का नहीं रखतें । यद्यपि मूल के हर शब्द का अनुवाद में पूरा ध्यान रखते है, इसीलिए मूल की शैली अनुवाद में स्पष्टता झलकता है ।

क) शब्दानुवाद का तीसरा रुप वह है जिसे उत्तम कोटि का या आदर्श शब्दानुवाद कहा जा सकता है । इसमें मूल के प्रत्येक शब्द ही नहीं बल्कि अभिव्यक्ति प्रत्येक इकाई के लक्ष्य भाषा में प्राप्य पर्याय के आधार पर अनुवाद करते हुए मूल के भाव को लक्ष्य भाषा में संप्रेषित किया जाता है । इसमें किसी भी शब्द या अभिव्यक्ति इकाई की उपेक्षा नहीं की जाती ।

२) भावानुवाद :– इस प्रकार के अनुवाद में मूल के शब्द, वाक्यांश, वाक्य आदि पर ध्यान न देकर भाव, अर्थ या विचार पर ध्यान दिया जाता है और उसी को लक्ष्य भाषा में संप्रेषित करते हैं । शब्दानुवाद में अनुवादक का ध्यान मूल सामग्री के शरीर पर विशेष होता है तो इसमें उसकी आत्मा पर । भावानुवाद एकाधिक प्रकार का हो सकता है ।

सामान्यत: मूल सामग्री यदि सुक्ष्म भावोंवाली है तो उसका भावानुवाद करते है और यदि वह तथ्यात्मक वैज्ञानिक या विचार प्रधान है तो उसका शब्दानुवाद करते है । परंतु कभी– कभी ऐसी भी स्थितियाँ आती है कि अनुवादक जब किसी अंश का सफल शब्दानुवाद नहीं कर पाता तो उसे भावानुवाद ही करना पडता है । इस प्रकार अनुवाद की व्यावहारिक कठिनाई दूर करने का भावानुवाद एक अच्छा रास्ता है । भावानुवाद का सबसे बडा लाभ यह है कि लक्ष्य भाषा में स्रोत भाषा की अभिव्यक्तियों की

Scanned with OKEN Scanner

गंध नहीं आ पाती, अनुवाद मूल का यंत्रवत अनुसरण नहीं रह जाता और उसमें मौलिक रचना जैसा सहज प्रवाह आ जाता है । भावानुवादक कारयित्री प्रतिभावाले लेखक के रुप में हमारे सामने आता है। भावानुवाद की यह सीमा है कि उसमें मूल की शैली आदि न आने से वह प्राय: अनुवाद न रहकर मूल पर आधारित मौलिक रचना– सा हो जाता है । अत: पाठक उसे मौलिक रचना का सा आनंद लेते हैं।

इसीलिए आदर्श अनुवादक वह है जो शब्दानुवाद तथा भावानुवाद दोनों पद्धतियों को यथावत अपनाते हुए मूल भाव के साथ– साथ यथाशक्ति मूल शैली को भी अपने में उतार लेता है और साथ ही लक्ष्य भाषा की सहज प्रकृति को भी अक्षुण्ण बनाए रखता है ।

३) छायानुवाद :– हिंदी में 'छाया' तथा 'छायानुवाद' दो शब्दों का प्रयोग काफी मिलते– जुलते अर्थों में होता है । छाया का प्रयोग तब होता है जब किसी पुस्तक की कुछ छाया या उसका छायावत धुंधला प्रभाव लेते हुए स्वतंत्र रुप से कोई रचना की जाये । छायानुवाद ऐसे अनुवाद को कहा जाना चाहिए जो शब्दानुवाद की तरह मूल के शब्दों का अनुसरण न करें, किंतु दोनों की दृष्टियों से मूल से मुक्त होकर अर्थात् बिना मूल से विशेष बंधे उसकी छाया लेकर चले ।

४) सारानुवाद :– इसमें मूल की मुख्य बातों का मूलमुक्त अनुवाद होता है । यह संक्षिप्त, अति संक्षिप्त, अत्यंत संक्षिप्त आदि कई प्रकार का हो सकता है । लोकसभा का वाद– विवाद का जो अनुवाद किया जाता है, वह प्राय: ऐसा ही होता है । अपनी संक्षिप्तता, सरलता, स्पष्टता तथा लक्ष्य भाषा के स्वाभाविक सहज प्रवाह के कारण व्यावहारिक कार्यों में सामान्य अनुवाद की तुलना में सारानुवाद ही अधिक उपयोगी पाया गया है । लंबे भाषणों का सद्य: अनुवाद करनेवाले दुभाषिए भी प्राय: इसी का प्रयोग करते हैं ।

५) व्याख्यानुवाद :– इसमें मूल का व्याख्या के साथ अनुवाद होता है । स्पष्ट की व्याख्या व्याख्याता के व्यक्तित्व ज्ञान तथा दृष्टिकोन पर आधारित होती है। उसमें कथ्य के स्पष्टीकरण के लिए कुछ अतिरिक्त उदाहरण, उद्धरंण प्रमाण आदि जोडे जा सकते हैं । इसी कारण व्याख्यानुवाद में अनुवादक केवल अनुवादक न रहकर काफी महत्त्वपूर्ण हो जाता है । लोकमान्य तिलक का गीतानुवाद इसी प्रकार का है । संस्कृत के विभिन्न आर्ष ग्रंथों के सनातनधर्मी एवं आर्य समाजी व्याख्यानुसार भी इसके सुंदर उदाहरण है । व्याख्यानुवाद अनुवाद से अधिक व्याख्या का भाष्य होता है । यह मूल की तुलना में काफी बडा होता है ।

६) अनुवाद :– यह अनुवाद का आदर्श प्रकार है, जिसमें अनुवादक स्रोत भाषा से मूल्य सामग्री का अभिव्यक्तित: अर्थात् लक्ष्य भाषा में निकटतम् एवं स्वाभाविक समानकों द्वारा अनुवाद करता है । इसे स्वाभाविक सटीक अनुवाद भी कहा जा सकता है । अनुवादक इसमें यथासाध्य अपना व्यक्तित्व नहीं आने देता । अनुवाद मुल जैसा होता है अर्थात अनुवादक का प्रयास यह होता है कि मूल को पढ या सुनकर स्रोत भाषा– भाषी जो ग्रहण करें, अनुवादक को पढ या सुनकर लक्ष्य भाषाभाषी भी ठीक वही ग्रहण करें । आदर्श अनुवाद का हमेशा तटस्थ रहता है, वह न कुछ छोडता है और न कुछ जोडता है । आदर्श अनुवादक सिरिंज की वह सुई है जो सिरिंज की दवा को ज्यों का त्यों मरीज के शरीर में पहुँचा देती है ।

७) रुपांतरण :– इस का अर्थ है रुप को बदल देना । अनुवाद के इस प्रकार में रुपांतरकार मूल को अपनी रुचि, सुविधा तथा आवश्यकता के अनुसार परिवर्तित करके लक्ष्य भाषा में रखता है । इसमें सामग्री, संक्षिप्त या विस्तृत, सरल या कठिन तथा विधा– रुप में परिवर्तित होकर आती है अर्थात से नाटक, नाटक से कहानी आदि । भारतेंदु हरिश्चंद्र ने शेक्सपीयर के 'मर्चेंट ऑफ वेनिस'

'दुर्लभ बंधु' अर्थात वंशपुर वेनिस है, 'ऐन्टोनियों' को 'अनंत', 'बसोनिये' को 'बसत' तथा पोर्शिया को 'पुरश्री' नाम दे दिए गए हैं ।

८) वार्तानुवाद अथवा आशु अनुवाद :– जब दो भिन्न भाषाभाषी आपस में संवाद करते हैं तो उनके बीच अनुवादक को दुभाषिया कहते हैं । दुभाषिया द्वारा किए जानेवाले अनुवाद को किसी अन्य अधिक अच्छे शब्द के अभाव में हिंदी में मैं वार्तानुवाद की संज्ञा देना चाहूँगा । कहीं– कहीं ऐसी व्यवस्था भी होती है कि कोई भाषण या वार्ता किसी एक भाषा में प्रसारित होती है, परंतु विभिन्न स्टेशनों पर उसके विभिन्न भाषाओं में अनुवाद साथ– साथ सुने जा सकते हैं । जो लोग यह अनुवाद करते है उन्हें आशु– अनुवादक और उनके कार्य को आशु– अनुवाद कह सकते हैं । जहाँ तक अनुवाद की प्रकृति का प्रश्न है, वार्तानुवाद आदर्श अनुवाद का ही एक रुप है ।

Scanned with OKEN Scanner